

अथ तो यह हा चेचारा तुम उठा रही हैं और नरकों से भी ज्यादा
 काम भोग रहा है, क्यों जी नरकों में इससे ज्यादा क्या दुःख होता
 होगा जोदो हम तो यह कहते हैं कि खुदा मय की ही लाज रहे,
 और किसी को भी ऐसा मुहताज न बनाये जो सबके सामने हाथ
 पसारना पड़े और फिर भा खुड न मिले, और घासपर इन्त
 नामों की औरतों की इज्जत तो तू ये पापपरवरदिगार नरक ही
 बना और उनका पदा मत उठा गगनी में क्या कष्ट तुम खुद
 जानते हो कि इस सुभगम चौदान के यहा क्या सदन पदा था,
 उनका औरतों का घर से बाहर निकलना तो दूर रहा कोई उनका
 गहना मर मा नहीं देय सकता था अथ यह उस ही के पटे का
 नवान बहू है जा मय के सामने अपना दुगुहा राना फिरना है और
 कोई नहा मुनता है, सब कहता है मेरे तो भास फिर पडत है
 जय में उसका यह हालत दखना है, लालना सुपराम ने मुम्हार
 बड़े २ कारण सुधार है अडे धन में यह मुम्हारे बहुत काम आया
 है, मय उसके हा पेटे का बट पर यह बुरा यत् पना है इस घाम्ने
 अथ तुम उसके काम आया यह मुम्हारा काशकार भा है इस
 घाम्ने जिस तरह होसक उसे निभाओ और खुड नहीं तो मुहताज
 और बकस समझकर हा खुड सहारा लगाओ जिसस यह दरदर
 भक्तनी फिरन स सब नाय और छ महाने घर में घुम्कर गाय
 जो उसर यह छ महाने बट गय तो फिर तो उसका काम चल
 निकलगा क्योंकि अरका धार ता में जागे से हल बेल मागकर
 उसका मोग तुलना दू गा और फिर फसल आने पर अंतनी पैदावार
 से ही उसको दो बेल ल दूगा, यो उसका काम चल जायगा और भागे
 का और ना बट जायगा, और उसका पदा रका का दना हा रह
 जायगा गग ने कहा कि मुझे ता खुड उन्नर है नहीं मुम्हार बकनी
 से और यह ता सारा का काम है इस घाम्ने इसमें ता मुल किसी
 तरह का उन्नर हो ना नहीं सकता है लेकिन म यह सोचता है कि

b₄

आवृत्ति लागू हो सुख का धाम हो मिलता था और विधा
 लक्षण का सफल सुखी थी।

जग के पास में उठकर घर जाने हुए पटवारी हीन होकर
 सोचता जाता था कि यद्यपि पर दया करने के धामों में जग
 ने टोकरे में २ सत्ता की विचारकर सुखाना शुरू कर दिया और
 सुखरान की घंटे का पट पर दया भाई तो उसका जमाने छीनकर
 उसका मदन पर हुए चलान का सदाय बांधन जग पर तो बहुत
 ही शक्ति किम्बत का दया है, पर क्या इन जेगों का धम हा पेमा
 दया सिपाता है फिर सवाल आता है कि पेमा का कोई धर्म ही ही
 नहीं सकता है यद्यपि दुःख तो पेमा ही मादुमहाता है कि जिस तरह
 हमारे सुख-सुखों में ही यद्यपि मज्जर लागू दुनिया की जगने के
 धाम पर दया दानदार बचाना के पात्रा धक विनाच पत्त है। धम
 भिन्न म पट र-र माथ में नाल डाल जेने है और हर धक हाथ
 में लस्यार निर र-र है और मरुत परर का जाण र-रकर भाणे
 जेग का गिहार करर र-र है इस ही किमम के यह लागू मालूम
 होन है यजुला भा भा पाता में घटों एक शाय के यह खडा र-र
 है माना होइ ल-र हा मरुत हुए है लभित ध्यात उसका मडलो
 का हा लभ र-र र-र है म-र पास भाई और उसन पर
 दयात्रा हम हा धाम तो जाल जमनाधम जैसे भगता का लाग
 यजुग भगन कहा है, मार खुदा यजुव इन लागों स य-र ना यह
 हा लभर-र है पेमा हा पर यह है ठाटा यजुग जो सुख के
 उठकर पर यन तक गियात्रे पर ही पड र-र है नहाने धीने में ही
 धर्म समझते हैं और किमा स भ न पहा तक मा नहा सुमाने है,
 लेकिन बेहमान पम है कि आदमा को शिर से पैर कर विग-र जाय
 और टकर म-र न लें, मोवद-र भाई उम्बे तो फाट्टे जा घोइ
 मतर मनी है दमानो उम्बे के मे २ ज-म विध है और किमम पर
 उनाइ है, तापतो जाला जमनाधम का धातों स तो भव यह ही

1

मेट करती और बुला पिला मे भी फमत समझकर हर तरह से
 सताते और दिक् करने लगी यदा तब कि उस इस लाइली थु
 के कारण उनका घर मं बैठना भा मुश्किल होगया और उनका
 जाना भा भाग पड गया तब तो उन सघों ने यह ही निश्चय कर
 लिया कि इस मुसाफर से तो यह हा बेखर है कि भलग होनायें
 और अगर लागगा बुल भी यात्रवर त दें तो भाग मागकर हा
 गुनारा कर लेवें या मिहल मजदूरा करव हा अपना पेट भर लेवें
 पर इस नित्य की धुहा फजोहली और हाय हाय से तो यवें जम
 मशम मे उापी बुनेता समाजया कि गुम धानी मतद या यनो
 पर जाकर क्यों इस यथ यथाये घर की मरतन और वातावा
 बनते हो इस घर मं तो ना बुल है यह सब मुदार ही घामने है
 त तैत बुल कि पर धरकर लवता है और गुनारी इन मरु ने
 हम तो मान कि जो बुल ना पाड खेल है और सौ टट मत्र
 यो-रत हन र हबूष बना पर और मुनिश को लुगार लगीट कर
 तरे द यह सब मु हार हा नित्ये लगे है रत गुदारी मते की
 ब न सो उाया मरदद मत है इसहा यामने दशों यानी जिद् रानी
 है यदा हावे पर जब समझ आ लायगा तो भाग हा भाधा होजा
 यगा और जो उतयोवनी समझ न ना भाये नाभी करा रिया ताये
 अथ तो यद शान्त हा लहेगा भयतः दुवा ना और गुन-मुआ तो
 मव ना य, मर पद-हा मर है इ न यामन भव ना य निनता हा
 रहेगा गुम गुल ता दयो से बीना २ उमया महता है और गुह
 का भा गुट पकर बैन रहता है मरता यदुन हा भाग यान का
 उरय हुआ था तब हा तो मेग यका मरा मर और इस बुनाये में
 विदाय बरान का सहा और मिन म-न वेगो वा उाना पर एक
 शकन का राकर विड द , हा' मुबताम भनता और गुनमा भा
 याना कर गुनिगा में हागा और ता में यनाग न हागा और जो
 गुो कि न भाते को न हाक और मरा निम्नत न पूरत ना हा

जमानादास के घेरे अपने पाप से भलग तो होगये परन्तु इससे
 फ़ैरा थीर भी ज्यादा बढ गया, क्योंकि सब एक ही हजेला में रहते
 थे इस वास्ते औरतों में दानदान में सक्तर होती थी थीर जमाना
 दास के घेरे की बहुतों को इस बात की बड़ी शिकायत थी कि
 मसुरना में घर का सारा माल तो अपनी नई औरू के हाथ में
 रखा है और हमको जैसे ही हाथ पकड कर निवा दिया है और
 हाथ उठाई कुछ नाम मात्र को देकर हाथ डाल दिया है, इस ही
 वास्ते अब यह औरतें न तो अपनी नई सास से डरता था और न
 उसका कुछ लिहान ही करता थीं बल्कि सीतनों की तरह से
 धामने सामने होकर लडती थीं और रात दिन यह ही ऊधम
 मचाये रखती थीं भागवती घोड़ी उमर की बच्चा तो थी ही, इस
 वास्ते जमानादास के लाड प्यार और हर घर का खुशामद से
 वह पैसा बचोला मुफ्त जयादराज निलज, पैदरी और
 येनमात होगई थी कि लाने में भटयारियों और पुत्रहियों की भी
 मान देना था इस वास्ते बड़ीस पनीस गला मुफ्ते और निरादरी
 की औरतों की इनका उदना एक प्रकार का पैदास का तमाशा
 हो गया था, यह भा जाकर इनको पूरा ही बचाना और भडकाता
 थी और उदवा कर मला घना तमाशा देना करता थी औरतों के
 लाने का प्रभाव जमानादास और उमर घेरे पर भा बहुत कुछ
 पडना था और यह भा भापस में सिजते हाथ जान थे जमाना
 दास को अपनी औरत से तो हर घर सैकड़ों बिल्क और हजारों
 गालियों का बौछाड़ के सिवाय कुछ भा नहा मिता था इस
 कारण अपना औरत के सामने ता उमका कुत्ते से भी अधिक
 दुदरा रहता था, पर अब तो उसको अपने घेरे से भा चैन नहीं
 मिता था क्योंकि मर तो यह भी इसका परा २ मुकाबला करने
 लय गये थे और बच्चा पका करा छोटा मय कुछ ही मुनास से
 और हजेला में जान पर इनके घेरे का बहुत भा पद म होकर था

माम मूट २ पर खाने हैं तब मने पीछे तो जो न करे यह ही थोड़ा
 है इस घाम्न यह अथ यह ही सोचना था कि सब नायदाद अपना
 जोर के ही नाम करदू और इस हा बो सब कुछ धरियार वे दू
 क्रिमवे मेने पीछे इसका गुजरान मन्ना भानि होता रहे और मरी
 मिट्टा मगव न होता रिने फिर सोचना था कि यह औरत नो
 छोटा मी बघी है नागममक नादान है और इसका भाव बहुत हा
 आदा घागक और मडार है यमा न हो कि मेरा यह माल न
 मेरे बेटों को हा भिने और न मरा जोर के ही घाम रई यकि यह
 हामनवादे ही आये जिन्को धरमी बहिन के बहने में पूरे पात्र
 हा हजार रुपये लिये थे और फिर भा सबर उठी माया था मरुज
 इस ही उधेदुबुन में न उस दिन को पैर था और न रात को नीच
 यकि सोन ही सोन में यह घल २ पर निरा हाणों का पित्र हा
 रट गया था और भाव मरन ५ दिव गिना बरता था ।

अध्याय ३

उमका जोर का यह हाण ना कि मान भाव ५ बाद ना मान
 बरन सब तो पा बघी जाने बरनी म हा आ बरनाया रहा और
 बरिया खाने बरिया म बरिया बगड और बरिया म बरिया अपन
 और ५ ममान मित्रन म कुछ सुश हा हागा था और जमान नाम
 के साथ कुछ मूट पर और इस मनाये के साथ बरना भा रही
 गेरिन १ - १६ बरन का उमर हीन पर उष उमका मगूर जयना
 भाव तो उमको लान साथ म पूजा हाता मूट हागा दना
 तक कि मां गता - कुछ दिनों में उमको लानका बाजबल देवकर
 ही गुमना भाने लान और यह उमको इम ३ के उन मने उमका
 के हाके बरनन मदानक कि लान के लान इस उमन उष बर घा
 के मन्दर भागा ता यह देवकाय भा उम पा बरन लाना ५ और

मय रूपया छान ले जायेंगे और भगडा उठाने पर अपने बाप से
 भा अपना हा पीला बुलायेंगे उन सब नृपुत्र भा न पर लफेगी
 और रो पीट कर ही बैठ रहेंगे, हम बास्ते इस तेरे रुपये का तो
 सर साथ राना ही टाक नहीं है हम इस रुपये को ले जायेंगे, तेरे
 नाम के नामधरु लिखायेंगे और साल भर में हा देने पर दिना
 येंगे, मरन हम तरह यदना फुलगाकर उमके भायों ने भी उसका
 सब रुपया अपने यदा नेनाम और दूसरे सामने महीने हा बहुत
 बुद्ध गायी देकर यह यदना शुरू कर दिया था कि यह अब तक
 के प्याज में समूह हुआ है भागे को और भी ज्यादा पसूल होगा,
 इसके अनाम भय उमने भायों नहर मौसम का धन की पैदावार
 जैम अच्छे खने के टाट, भुने हुए होले गेट्टवा ऊमा यच्चे एककाम
 मुता हुआ सत मका फ मुट्टे, फरर धान की खोल, गध, पीडे,
 ताजा २ गुड शकर राव और रम य घडे दूध दही ताजा घा और
 भी ऐसा हा पना बहुत चात्रे उमके पाम भिजगाना शुरू कर दी
 थी और कहन लग गये थे कि यह सब चीजों नेती भासामियों से
 भाना गुरु होगी है, निमसे उमको पूरा यकाम होने लग गया था
 कि मेरा हा या रान पर उठने लग गया है इन चात्रों के पडुवन
 से अपनी बहिन को खुग देस पर पाड ही दिनों में उसके भायों
 ने ऐसा ताता बाध दिया था कि रोड एक न एक मद्मा कोर न
 कोई चीन लेकर पडुव ही जाता था जिससे मद्मा पूरा पूरा
 साठकारना बन गई थी और उसका बुद्ध राना उसक भाई खींच
 ले गये थे।

ताजा के हाथ में से सब रुपया मिट्टा लेन क बन्ने भग
 यता उमसे पर क सब के उमने ही उद बाध भायों रखी
 था और अकरत से उमने हुए बुद्ध राने मद्मा कोर न
 से उमको खींचे देस से उमने न बने ही थी और नि
 हर वन नाव उमने राने ही उमने न बन बाध

चुका है उसने मैं नहीं भागता है फिर सी रूप पत्रपारो के भागे
 रघुवर बटने उगा वि भापे तो यह अथ लो और भापे फिर
 भुगताहूंगा, इन रूपों को देण पर पटपारा बट्टा घबड़ाया और
 बट्टने लगा कि लाला खाद्य जय तुम मौरुम तोड़ा का मामला
 हो चलाना नहीं चाहत हो और चलाया भा तो जय में ही तुमको
 किसी किसी का मदद देने का इनकार करता हूँ तब यह रूपे केने
 अमनादास न कहा कि भा तुम हमारे दारिम हो और हर यत
 काम भाते हो, यह मामला नहीं चलता है तो न सही, किसी दूसरे
 मामले में समझ जेना, हमारे तो रोन हा मामले रहने हैं, पर जो
 पत्रपार "पाल" निरुप गया उसका तो भुगताग ही होजाता
 पहलर है, पत्रपारी ने कहा कि जय कोई दूसरा मामला होगा तब
 जैसा मुनामिब होगा देखा जायेगा पर जय येमामने तो मैं यह
 रूपया नहीं के सपता हूँ, इस पर लाला ने कहा कि अगर येमामन
 नहीं सेन हो तो यह ही बात अपने जिम्मे लो कि सोच समझ
 कर कोई ऐसी बात निबाउ देंग जिससे इन धरता को यावत
 द्वारा भी काम वन जायधिगि उस राउ का भी कुछ नुषसान न
 हो तुम तो भाइ पत्रपारा हो, उसका मौरुम पनी रहने में भा ता
 सी रमने यस निफाउ सके हो जिसमें दोनों का ही फायदा होहा
 रहे, पत्रपारा ने कहा कि मुझे तो येमा कोई बात सूझता नहीं है,
 जमनादास ने कहा कि जय नहीं समझी है ना न सही महीनेगे महाने
 में या वरस म दा वरस में जय सूझे तब हा सदा, गरज सी बहागे
 पत्रपार लाला जमनादास यह सी रूपे पत्रपारा का देही भापे
 और पत्रपारी क दिल में भा अथ धार २ यह ही बात भाते लगी
 कि जो इना पूना पाठ करता है और हर धक अपन नियम धर्म में
 ही लगा रता है केने हो सपता है कि उसने ही येमा गरब येदा
 क यह चोरा करा है, जा उसन ही चोरी करा होना तो अथ
 यह इना भनाज और भाउे वरतन का उलको इजाता और फिर

मीशूर होते हुए तो राजरानी के यहां चोरी भी नहीं हो सकती थी, यह भरता और भरता, अपना जान पर खेल जाता और एक नितका भी न जाने देता पर क्या करे उस दिन ता जमनादास ने कार्र बहुत ही जरूरी काम उठा रखा था और गाय के बहुत से चमारों को अपने यहां बुला रखा था और चारी तो हाना थी सो दोगर और जमनादास के दिए हुए दान में अब उस बेचारी का पेट भी भरने लगा लेकिन अब इन चमार को यह फिर पैदा हुए कि बिना बीटों के उसका जमीन जुने किस तरह, गाय के फोंरे किसान यह धरती जोतने को मांगते थे और गाला का लगान देकर राजरानी को भी सब कुछ देने को कहते थे और चमार को भी बहुत कुछ लालच दिखाने थे लेकिन यह चमार किसी के भी लालच में नहीं आता था और अपने को नासमझ जान कर पार पार गाला के ही पास जाता था और उसमें ही मलाद मिलता था, बिल्कुल भी न जुने पाये ताकि गाला चमार न होने के साथ यह दिगरा कराकर सकार के हां बुझम से मोकम तुडया तक और देवगंधे जमान पर अपना पामक, लकिन जाहिर में यह उनके डेके की ही बातें बनाता था और किसान न किसान तरह इन मामले को टलाता था, भाविर जब गाय के किसी भा किसान को यह चीज न हो गई तो भौंरु चमार वहीं दूर दूर से शेरमिंद चौहान के भाषा जो राजरानी के बाप का तरह का बहुत दूर का नेशार होता था और जिसकी कादन उससे जमाना न कुछ था और जिसको कोई जमान जोतने को नहीं मिल सकता वह अपने हल बैल और खेतों का सब सामान ले भाषा और राजरानी के यहां रह कर उसका धामन जमान जोतने लग गया दास को भरत में तो इन कारणों का बहुत फिर हुआ जाहिर में उसने बहुत ही शुशा दिवार और शेरमिंद का

का दरारा गिनाया शेरसिंह बहुत दौगल था कि कौनों लोगों ने मुझ पर यह छूटा इत्तनाम लगाया और मुझे पुत्रिम में सिचवाया, रातरानी भी बहुत घबड़ाई और जमनादास के पास भवर भिन्न था उसने भा बहुत ज्यादा घबड़ाइत दियाई और पुत्रिम का कुछ दे दिया पर शेरसिंह के अपने दर को पाविसाचने जाने की बात चाई और रातरानी को भी उसके ही साथ चले जाने का मलाइ बनाई ऐकिन शेरसिंह के पास तो अपने गाय में जाकर गुजारे का पाइ भा सूरत नहीं था इस वामने कुछ भा हा उसने तो यहीं रहने की दहराई और पुत्रिम को दे दिलाकर राजी कर देन का हा बात जमाई ।

अध्याय ५

इपर तो यह मामला चल ही रहा था कि जमनादास के यहा उमकी घर वाली का सान मी रपय का साने का हारगुम होगया, तिसके कारण भागवता ने शरगु मचाकर और रो घोंकर घरता शाकाश एक कर दिया, जमनादास ने गुरन्त हा गैब का बात जानने चाये छानियों को बुलाया और उनरे द्वारा खोरी का सुराग चलाना चाहा उन लोगों में से किसी ने कुछडली बनाकर, किसी ने घडा फिटाकर, किसी ने मिट्टा उट्टाकर, किसी ने खायल बनाकर, किसी ने उट्टे क दाने मगाकर, किसी ने अपने इष्ट देव को मनाकर, किसी ने शिर हिलाकर और किसी ने लाल लाल भासे बनाकर खोरा का पता बनाया, इनमें से किसी का कहना था कि माल घर में हा घरा है, खोर बहुत था कि घर के ही किसी भादमा ने यह काम करा है, एक पता देता था कि यह खोरी एक राइ थीरत ने ही करा है, और दूसरा पकीत दिहाता था कि एक जयान पुरय ने हा यह चाज करा है गरज गैब की बात बनाने

मन्थानाश मिटा कर ही भयना जमोदाग बनाया है, पर यह पाप का
 नाश सदा नहीं करता रह सकती है ? इस धाम्ने भय तो यह हा
 मातूम हाता है कि उसका यह पर भानुमता का सा तमाशा और
 विज्ञानी कागा समबारा खतम हापर उसका यह कारणाग रने की
 दाधार की तरह एकदम बैठ जान पाला है और धन में पाशियों
 का जो हाउ होना है उनका ही तरह यह भा एक एक दाने को
 तबसता दिखने लाग है और कागा हापर और यदुन में कीड़े पद
 पर नकीं क मदा प्राम भोगत लाग है क्वाकि 'गगवान् के द्धार
 में हेर भी है पर अघेर नहीं है इस धाम्ने का जैसा करना कागा
 उसका पण भा एक न एक दिन भयश्य हा भोगेगा इस पर दूसरा
 करता था कि भाइ सुमदा भयत नहीं है जमादास ईश्वर का
 मथा भन है और भरा नियम धरम पर पूरी तरह कायम है इस
 धाम्ने पर प्राम नहीं नाग मथता है बकि दिन दूरी और गान
 कौमुना मथदा हा करता मला जाता है और साहय भगवान् मथने
 भकीं का पूरी मथत ला है और मथ तरह उनका मथा करता है,
 दाने कटा हो कि भांधा जय मथद में हा जाय पर जमनादाग को
 नि निकलने हा मथता विर मरिष्ठी में जाना और हा तीन घंटे
 पूजा पठ करके हा घर भाता और मदीं हा मथे ममीं ही दुख
 हा मथ सुग हा पर उसका भयन महान प ने और निव्य की मुनि
 क्रिया म मगी दाना पर धाने लाग थोडा हा जाता है भाइ
 धमर ऐसी को भा दुख हात लग ता विर धरम हा दुनिया में
 क न कर रग मथगर का हात भी भाइ बीन एमा है जो दो
 ऐस बमने के पण्डा हाट पठे मगी करता है पर ता मथथा
 का काम हा है हमने पाप का और पुण्य का मथर हम हा विष्ण
 का भयेर दाने पर म और दुखर २ हाये मगी और जमनादाग का
 वरानों के वकी २ व मने बीनने उउउउ म ।

कर पीते थे और फलार को हाथ भी नहीं लगाने देते थे फिर कुछ
 दिनों पाठे उन्होंने पिरादरी के जौमन ज्योनार में यहा तक कि
 चित्त रसोई मं दाम अदमियों स ज्यादा क चास्ते घाना बने उस
 रसोई मं का पाना शाना भी छोड दिया था, गरन भाहिस्ता २
 यह दोनों बाग बेडा जेन घना मा होगये कि मदिदरजी स भी हर
 का ताराफ हान ग गई और लोग इनको भगतजी के ही नाम से
 पुकारन लग गये, और कहने लग गये कि साहय मदिदरजी का
 उपकार तो इन्हीं की घडीलत होरहा है, नहीं तो यहा तो तान २
 दिन भा पूना परदाग नहीं होती थी धन्य है साहय इनको जो
 धम में ऐसा से लग ई है और अगता अगत सुधारने की टहगई है
 फिर गद्दारास स कहने कि पयोना तुम अपने छोटे बेटे को नहीं
 समझाने हो जो दशन करन भा नहीं आता है और भाटे चौदश की
 भा हरी खाजाता है दूसरा कहता कि तुम हरी को कहते हो मने
 उसको कदमूल तर पाने दसा है, इस पर तीसरा कहता है कि
 इसमें इनका क्या बसूर है यह तो इस ही कारण उसको घर म भी
 नहीं घुमने देते है और उससे बात न कर करने के ब्यदार नहीं है,
 इस पर सब लोग कहने लगते कि धन्य है साहय इनको वीसी धर्म
 का फमार कर रहे है चाणे की इटी क काम भावेगी, इस पर कोई
 कहने लगता कि चाणे का क्या, अभी देख लेना कि दिन २ बीसो
 बूडी होनी बनी जरूरी है और उधर उस मधुरादास को देखो जो
 दूसरों के दुकद सुगता है और पाउरवार २ रुपय की नौकरी करना
 फिरता है मन्दिदरजी में जब कभी भा शारर होना था तो यह
 दातों जरूर जाने थे और शारर का बधन सुनकर यहीं अडा के
 साथ याद २ कह कर शिर दिजाने थे मगर अफमोस है कि तब
 कधना का एक अक्षर भी नहीं समझ पात थे और न समझना हा
 चाहते थे बल्कि नो शास्य में लिखा है यह हा सत्य है ऐसा अन्त
 अज्ञान रखाता हा पाफी मानने थे और अपने को सब से बडिया

2

1

1

चंडी मुंडी भैरों काला आदि हिन्दू मुसलमानों के भी सब ही देवताओं का मनाने थे मुसलमान मीठयियों और स्यानों घटों स गड़े तापीत्र भा बनवाते थे और डाढ़ू भेना और जंत्र मंत्र मा यहन कुठ कराते रहते थे, खैरान भी बहुत कुठ निरालते ; थे और किसी भा भेषधारी फकीर का भपने दर से घाला नहीं जान वृते थे ब्राह्मणों से जाप भा कराते थे मुसल्ली भा निमाते थे शहादों की कबरो गर चगी भा उढाने थे और ममचिदों का तेल बत्तों के लिय पैस भी दित्ते थे इस घास्ते सब हा लोग इनका जस गाते थे और इनका पूरा पूरा धनात्मा बनाने थे ।

अध्याय ७

इयाह के तीन साल पाउरे बुद्ध रामानन्द का दहात होगया और य रास १७ वष का बालिका रामकला विधवा होगई, रामानन्द और उमक दा गोटे भाइयो लीलतराम और शुगनचन्द्र का सब फारख ना और खाना पाना इकट्टा हा था और रामानन्द के बाद भा उन्होंने इकट्टा हा रहना चाहा लेकिन रामकली को यह बात किसी तरह भा मचूर न हुइ उमने तो भलग होजाने का ही टान ली और एक तिहाइ माल घाट पर दे देने के लिये विद करन लगा और जब बहुत कुछ मभभान पर भी यह न मानो ता तवार यह लोग इस बात पर भी राडी दागथे कि कारखाना तो इकट्टा ही रहे और यह आमन्तो का एक तिहाई हिस्सा लेता रहे और अगर रहकर उमको जिस तरह चाहे सब करता रहे, लेकिन जमनादास को यह बात किसी तरह भी पसन्द न थार और उमने अपनी बहिन को सब हा ताल पटा पनाइ और मुन्दमा लदाने की ही बात सुन्कार बाखिर लाजार होकर उन लोगों न यह भा क्या कि हम सार कारखान का एक तिहाइ हिस्सा भा

पापा था और उसका धार प्रसार का लुप्त करने का मौका
मिल जाता था ।

एक मुस्लिम की पैम्पी में उतरने के लिए जगत के रंगों मटों
साहसियों और धर्मो दैतियों के मिलने की वृत्ति - दिन उभर
साथ रहने का भी मौका पडा था किन्तु स धुन स धन मा ध
निर्वाण श्रेष्ठमग का दिन यद्यपि गणय कथाय और स्थडी
अन्य से हा हुआ करता था ह्य कारण समतात्मक का भा उन से
यह सब गैर करने वाले थे यह उक्त अथय सामे पाते
की शक्ति का मिली मिली । धुन कुठ कुठ करता था और
नाक भी बिना धरने से था दरगाहा हा निर्दय पर गेता
था लेकिन शिष्टियों के धर्मो का ताता ताता एसा मजाक और
आनन्द उल्लास मा पम्पद धारणी ही ह्य चाम्पन की धना ।
धारण यह भी यहा जा दुग्या था और धरना ध धा ध सामन
कुठ ही हाता रहे दिन पर धन स सदा हाता था, यह लोग भा
उल्लास धाना सा सान्ध ३ ध और न ३ धाम हा प्रयत्न धन धे
जमाताम भा अन्ध विद्वान हा धुन जाता था और धर्या सदन
में ह्य तात उक्त शक्ति हा हाता था धरि यद्यप्य कुठ
हान कर भी धर धरि धाम धम धे धरना न न धे शक्ति
था और उक्त धान धान का विना धान का हाथ न ध मा
सा धरना था और धरनी धुन धिना धा धनी न ध धरना
धिना था कि धरना ध धरना ग धरना ध धरना धन सध
धरने धुन धे हा धरना धरना धन था और धन धरि धे
भा धरना धन धर धान था और धरि धरि धुन और धरि
धरि हा धरि धन धे धरना था ।

एक प्रकार एक मुस्लिम के कारण धर्म शक्ति लोगों के मुन
काय का यह धरि समतात्मक धर धुन धि न ध धरना धन धर
धरि धरि हा धरि धरि धरि धरि धरि धरि धरि धरि धरि धरि

२४

संज्ञायां चाने धे क्वने पर चरा उदाने धे जुमें क रोच मुसही
 निमाने धे चरा मुडा काग मैरी भादि दगा देयताओं को भी मना
 रखा था लेकिन शताय का धान और चरा अन्न दाय से उदाने
 में मरगता था इस धाने पुडावियों का नकद दाम भुगता देता था
 ि यह सुबे स सुद हा अन्न - दयता का भोग लग घें और मय
 के सामने गत्र न गावें ।

गान चमताम ने मय हा धम क देरा देयताओं को मनाया
 था, और चारों तरफ मंत्रा का गद्ग घेगया था, घटे २ तापीज
 घाय कर चरफा में जाता था लबिमें पर मय चलता था चर
 दगा में चरा गहा सुदयुता था उसने रामरग क देरों पर
 मूठ मा चलयार पर अयमाय है कि कोई भा तदवार काम न भाइ
 और घना दनार धान जी मगाई याना धनग्य न रामानद
 और उमक भाव्यों का मार कागाने था मकीदार टहराया
 और उन तानों का हवडा हा धान पान और हवडा ही रहन
 सग्य मिट करके रामानद क भाव्यों को हा मारवार
 गान का माणिक दनाया और रामरग के गृहो क धाने
 एक छाटा का मवान द दन और उमके रोग कपडे
 के धाने पजाम कयवा मदाना दन रहने का दुखम गपाया इस
 मार घेगने को सुनकर उयनादार क सो पैरी तले में धरना
 त्रिवा रू और एक घउर ग्रावर धनम स नचे गिर पना गेगी
 ने पड़ी मुश्किल से उमका उठाया गवासा सुंघाया, मुंह पर
 पानो क छोटे दिने धनें पंवा विपा तप कुउ होरा टिवाने भाया
 और जब रामरग में दन दुखम सुना तो धा लो पट २ कर नागा
 होमा उमम धाने देयतों को रुय हा दिग म गदक बीमा धीर
 हाग पमार २ कर बाहा कि टे मगजन ! ह निर्जोहा के माय ! नून
 तुख दुमिया बी तो कुउ न तुकी पर मय भी जो नर में कुउ मर
 है तो उरक मारे पून मर जायें ज्यदों नाग बहुर्य सांड होमावें

एक पैसा भा पुलिम धागों को नहीं दिया, सारा अपने आप ही हजम कर लिया बटिक जहा तर हो सका उसका बिल्टाप ही पैरवी करी और उसका बदमाजा में चालान होवाने की हा रपोट कराई लेकिन कता रादय ने अभा यह मामला चगन लापरन समझा और एक दरम पाठे फिर दोबारा रिपोट करने का हुकम भेजा ।

इस तरह यह आफत तो कुछ हल्का हुई पर थोड़े ही दिनों पाठे यह बेबारा शेरसिंद और रात्राना इस मी पढ़िया एक दूसरी आफत में फस गय अदश धार पुलिम न उन पर यह इल्तान ग्याया कि रात्राना ने शेरसिंद से धारवाना रग्याया, गम रखाया और फिर उस गम का गिराया गाव का दारि भंगन घमारी, धोवन बहारी और यह बहीना पडोना इस घात के गप्राह बने और मामल का तफायात शुरू हुआ, इसमें शक नइ कि रात्राना २० २१ दरम की जमान पया था जो शेरसिंद भा ३० दरम का जमान पट्टा या निवरा व्याह भा गही हुआ था इस घायल इन पर जा कुछ भा गन किया जाय यइ धाडा है, लेकिन सच बात यह है कि रात्राना धनियों का रिपों जैमी नहीं थी नितकी व्याह नी दम दरम का हा उमर में हागाना है और तामरे साल गीना हापर तेरह चौदह दरम का उमर में हा बच्चे का मा बन जाता है और अपने कामय धग का जरा भा नहा धामा पाती है बटिक धा ता पैस रागपून घरान का पैा था जो रण में शिर पगाना हा धगता घम समभते है और नगारा की गाट के सामने हा धपना छती धगत है नितकी रिपया रण में पाठ दिखाना भागे हुए कायर का तुगगिण धा का निवयन उस शूमा की विधवा पनना पमद करता है तो युद्ध में हग रहता है और प्राण रहने तब मैदान में नहीं हगता है यह ता पैसा जानि म पैदा हुई थी तो १६ दरम से कम उमर में लडकी का और २० दरम से कम उमर में लडके का रिवाह नहा करते हैं, इस घायल धाय के

नहीं है कि तुने अपना भी बसूर मालूम नहीं है थकटा सुन भगर
 तू मेरे हा मुह मे मुना आहता है पर यद तेरा रोता धाना मुझे
 नेक भा नहीं भाता है इस जाने आदमी की तरह विभक्त कर बैठ
 और भगने कानों को पेंच कि तूने मुझका ध्यान कर जाने में कसाइ
 से भी तिन्यना का काम किया है और महा गौर पापा का बोझा
 जाने शिर पर लिया है पापा-तूने व्याह के दन जरा भी न सोचा
 कि उस दन तेरा तो डकटा बवाना था और मुझ पर अभी घद
 ही जराही धानी थी तू तो उस दन ४२ बरस का होकर अपने
 पीने पीनियों को गाला में लिगता था और मुझ १० बरस की
 नटी बच्चा को मेरा मा बापों ने अपनी गोदा का गिराना बनाया
 था लेकिन हायग मुग्धनों की म्याथ तूने अपने चार दिन के
 मन्ने का जामन मरा मारी नधानी गार म मिगाइ और रुपये का
 जेम गिराकर मेरा मारा ना महा डायन बनार हाय! हाय! निम
 तरह कोर जेभा माहजन अपनी पूज्य गाय को कसाइ के हाथ बच
 का लुरी मे उसके टुकडे २ बराना है और उन टुकडों का पानार
 में डिक्का कर मुमलमानों का हाडी पकजाता है इस हा तरह मेरा
 मा ने भा रुपये का गाला में बाकर अपना जान स धारा धरा को
 तुम महा कसाई के हाथ धरा कर तेरा सुपाके का लुरा मे मेरी
 लना जयानी को चूर चूर करवाया है और तुने उस गात्र स भी
 यात्रा नइपाया है कौंकि गाय ता उतनी ही देर तक तपता है
 तनती देर तक कि कसाई की छुग उसकी गदापर फिरती है जिसमें
 क घडा गा त लेगती है लेकिन मुझ पर तो जबरस्त काम
 च की बाक सुस्तियों को चाने टुप परमों घीत गये हैं और तव
 हा मेरे प्राण नहीं निरन्ते हैं, तुम पुड्डे के घश म पडकर ता में
 लुप्य योनि में पैदा होकर भी नकीं के दुख भाग रही ह और
 जेम प्रकार नारकियों के शरीर के टुकडे २ कर देने पर गा, घनी
 ई पेंच देते पर जो और तैज के बलादे म पसा देन पर भी उनके

का ऐसा ही बड़ा यत्न संभोगा जैसा बंध रहा है और एक एक
 तिनके पर भापस में इस ही तरह छुटार दंगा होगा जिस तरह
 छोटे छोटे बच्चों में हुमा करना है और सब यामों में ऐसा ही
 वेग विडंबना जैसा कि बच्चों के हाथों में खिंडा करता है इस यामने
 बनमल ध्याह करके भी घर के अन्दरी तरह चलते रहने की उम्मेद
 करना और सुख शान्ति की भाशा रखना गधे के सोंग बाक के पुत्र
 और आशा के फूलों का आशा के समान भस्मभय है जो कमा पूरी
 नदों हो सकता है इस यामने जाओ अपना धधा इगा और फिर
 कभी ऐसी बात मत पूजे अंत में इनका और भी कह देती है कि
 जो लोग धनमें विवाह करते हैं और ३०-४० बरस के होकर भी
 बारह तेरह बरस का छोकरा को ध्याह लाने हैं उनके हृदय में तो
 दया का अंश भा नहा जाता है इस यामने उनका घमान्मा बनना,
 हरा सफ़ा और फदमूल का छोडना रातको जघ्न जघ्न करना
 और पाना छानकर पाना सब बाहर का डोंग और गाय दिव्याया
 हो है दुनिया का टगन के यामने हा उनका य० सारा लाग समागा
 है गगनान पेन पाखण्डियों के बदवाने में नहीं आ सकता है और
 ऐसों का पूजा भक्ता से राभा नदोंहा सकता है क्योंकि जब उनका
 हृदय ही पत्थर सा बनार है तब उनके परिणाम कितना तरह भी
 येन नहा हा सकत है जिसम उतरी कितना प्रकार भी पुण्य की
 प्राण दोसरे और उतथा क्रिय ये घम नियार्ये बन सरे इस
 यामने तुम अपने घमान्मापने के घमण्ड में भा मत रहा बटिक
 यह हा निधय रखना कि छोटा सा छोकरा को ध्याह लाने से हमारे
 परिणाम फनाइयों निम ही बटोर होगये हैं और उन अपने बटोर
 और निम्य परिणामों के अनुमार ही हम महापाप कमा रहे हैं
 और नकों में जाने के सामान बाध रहे हैं जमनादास अपना पोरु
 का यह तबबार सुनकर मुह नाचना रह गया और मुन्न होकर पुत्र
 पाग बाहर बैठक में आ बैठा ।

हर सा दिन गरि और उमरी बुराई मय हो जगद पैल गरि, फरे
 हमका यह दुआ कि जमनादास को उधार मित्रता तो य इ होगया
 और जिसका तो धारता था उसका तवाजा शुरू होगया यह
 कह कि नागिरो भा होन गयो और निगरा स पहिले ही बुकी
 करा दो का वागिज भी वा जा नगी इधर जमनादास भी एव ही
 पाइया था अपने भी पड़े २ पैर पद गूना पहिया बनाइ, जाग
 दुखतमिज भी कसीद पने नप्यार बनाये भयना निगत स मुकरा
 परे २ तद व दुखगत बनाएर दिगाये, अपने होमों स मठी
 नागिरो भयन ऊपर बराइ भरो मकान और नायदाइ व सुडे
 पैरान भयो रिन्देदारों धार भू मुलाकानियों के नाम जिने बहुत
 सुउ गान भास्याय और दपया पैसा इधर उधर पहुँचाया और
 अपने पवन वा मय सुउ उवाय बनाया मान का यह पम कदर
 में पहा था कि भीरो व ता हाश हा गुण हाजात पर पाइर जमना
 दास पर भागिर २ तद भयना वासिरीं न मती बना हर पम
 पर म मरि वागिका और नर न न मदारो बनाता हा रहा जिनमे
 उमके मुकाबिल वात मद्र हैगभा म दइ जान थे और मन लग
 जान थे और बभी २ ने एम दाव मे वाजात से वि जमना हा और
 मनाम लग जान थे ।

जमनादास ने भयन मकान में बँधवा लगाए रातका वात
 और वा दुहाई म गरि और तद कथा पैसा और भाग भास्याय
 धारा कने जान वा एव निगरीं निर छोडे हो दिरीं ए उे भयन
 एक होमने से भयन ऊपर नागिरो बराइ और निगरा न पहिले ही
 एने सब मान भास्याय को बुकी निबाराई जिनमे नाग पर
 वात और इत दुखान टगेम एने एर भा गिफ हा भी एवे
 का एव वा दूरा पना मन्दाय भी एव नकद और नन भी एवे
 वा दुखान का मान और पाव भी एव से कने एवे निकले भय
 बना वात में नगा नाग कने वा कडा न गो व नम जमना

इस पर पड़ोस की एक औरत ने समझाया कि जीवेगा भी यरेगा भी और उमर मा बहुतरी होगी मू घबराये मत पर एक बात मेरे पदे स करिया कि पांच बरस तक इसके बाल मत उतरवाइयो, जब पांच बरस का होनाये तब मात का जान देकर उस ही के धान पर पांच उतरवाइया जमनादाम की बहू ने कहा कि हाजा यह तो मैंने पहिले ही सोच रखा है कि तुम्हारी दया से जब यह पांच बरस का होजावेगा ता जाये बाल ता हस्ननापुर छेत्र पर उतर वाडगा गौर भाये पांच माता के धान पर बटगाऊगी, मैं धारी उमर नाम पर माता का तो मुझे सप से पहिले खयाल है, मैं तो उमरवा मुगा भी छुडवाऊंगा और घेंटा (सुभर का बच्चा) भी शिर के ऊपर को फिरगाऊगा और मैं तुमसे मन्ना बहू मैं तो बरान्दर रौर पर भा भाऊंगा और लौंडे के पिता को भी नंग पैराल जाऊंगा, क्योंकि मैंने तो उनका भा मिश्रत माम रखी थी, खयर नहीं किसके प्रताप से हमको तो पाचधी धार में यह पुत्र का मुन देखना नसीब हुआ है सा मैं तो मय को ही मनाऊंगी, हमारा तो सदा स मय ही न प्रतिपाल करा है और अब भी मय हो प्रति पाल करेगे ।

अध्याय १५

बच्चे के पैदा होने के एक हा महीन पाछे जमनादाम ने याथा का संधे बगया और बहनों को अपने साथ लगाया, इस यात्रा में उसने बहुत ही उदारता दिखाई और संध में यह मानात्र लगाई कि जिम किसा भी यात्रों के पास बच की बना हा यह हम से रुपया मे और होसके तो घर ऊपर बरिम दो और न हो मय तो न दो, मगर कौन उधार लेता था सब ही के पास काफी रुपया पैसा था हा जगाद जगा रज में बटना उताना होता था

गरज जमादास के संघपति होने से संघपालों की बहुत ही कुछ सुवाता रहा और सब ही की यात्रा बड़े आराम से होगई यहा तक कि घर भाकर यात्रियों ने अपना इन चालाकियों और धोखानियों की बहुत ही कुछ डींग मारी हमने यात्रा में क्या २ पदों किया कितने शरद का धोखा लिया क्या - दायपेच खेगा, क्या ० कुछ भेगा, क्या ० लड़े कदा ० अडे गरज सब ही कुछ सुन ने थे और अपना हा बात उजा दिखाने थे, साथ स्थान पर जाकर टहरने के मकान के निचे आगम में लडना, अरुन साथ के मित्राय दूसरे संघ के यात्रियों की तद्ग करना सदा विडम्बणा पाता और अपना काम बनता यह ही सब जिम्मा पहानिया थी जो यात्री लोग धारिण भाकर सुनान थे मामा यात्रास यह ही सपक सब लकर आते थे और सुनान २ लज्ज हो ही जाते थे।

जहां इजा या बीर गाड़ियों का सवांग हाना थी यहा जमना दास और अन्य भा बर घमात्मा गेग पैदल हा चला करते थे और सवांगे पर बैठता मंजूर नहीं किया करत थे, उस समय उनका यह पहना होता था कि बीर घोडा आदिक एगुभी हमारे हा पैर जीव हैं जिन पर चढ़कर चरनेस हिरा पादोप लगता है येशक इस हिना का हम तिय नहीं गार चकते हैं पर यात्रा के समय तो हम इस चतुन हा भासना स घवा सवन हैं यह पहनर यह धर्नाना लाग समय ता पैदल चलते थ और अपना भमबाध उन गाड़ियों में लाद देत थे जिनमें उनके लद्ग साथी बैठे होत थे इस प्रकार पात्र २ सपाठियों के साथ हम २ सवारियों का भमबाध लद् जात स घेनें भ घन नहीं जाना था भीरगाड़ा घाला चित्त ता था लकिन उसको यह हा मरुद्धा दिया जाता था कि यह कुल भमबाध उन हा सवारियों का हैं जो तरा गाड़ी में बैठे हैं यात्रा को भाये हैं गाना दाता और भाडे बतन साथ लाये हैं, इस वास्ते यह सब भमबाध ता इन ही क साथ पागला और सा पीकर

था इस वास्ते उमफा रूप ही नाम हुआ था और यह सैठनी ही कहलान लग गया था ।

मजान पर धाकर भी जमनादास ने यात्रा की खुशी में दिल खोलकर उयोनार करा था निममें हिन्दू मात्र का यदिया भाजन विनया था और सब धन लगाया था इस तरह उम बालर क कारण पहनों की यात्रा होगी और जमनादास क सान हजार रुपये धम में लग गय, इस यात्रा के यात्र में यात्रा लोग खुब ही अभिमान में तुल रहते थे और जया स लाचार होकर गुम्मे में भर रहत थे जाम जाला भी सब हा किम्म का करने थे और मायाचारा भी सब हा प्रचार का बतात थे, यह आपस में भी लड़ते थे और भय लोगों स भा बड़ते थे जिनका बजह से हर घट पक न एक तरह का तमाशा हा बना रता था और यात्रा का समय भगडे शरणों में हा बरता था जमा ७ तो ताथ पर जाकर भा दूहा होजाता था पर बहुत दर नी रहन पाना था और जया ही निमट जाता था जमनादास क बहुत सबहा ताथों का बदना नान तात धार करा और बहुत हा धदा के साथ करी इस पाले उनके तो मानो नम ऊम के पाप छे होगये और पुण्य के मण्डार भर गये हा ताथों का तां मिट्टा के स्पश से हा मनुष्य का कल्याण होना है जमा भदान हान से जमनादास और अन्य भी कई धर्मिमा लोग यहा स बहुत भा मिट्टी खोदकर गये थे निममें से वह बुड मिट्टा नित्य मन्दिरो में रग रत थे और मन्दिर में आने वाले त्वा पुस्य वह रन जगत माथे का लगाकर अपना काम सफल, होना समझ रत थे ।

जरा भर भी दया नहीं आता था, यही जमनादास के यत्न से तो ऐसा हा मात्तम होता था मानों इन लड़कियों को दुःख देना ही उसने धर्म समझ रखा था यह चारों लड़कियां उनको काटा सी गजकता थीं इस घाम्ने वह सदा जन्म मरना ही मनाता रहता था और इस बात की निश्चि के घाम्ने धीमपमान से भा प्रायना करना रहता था भाद्विर कुछ दिनों पीछे उनका मनोरथ पूरा हुआ और उनकी लड़कियों का मरना शुरू हुआ चार मात के बीच में पहिली तान लड़किया मर गई और सुदियों में घर भर गर, केबिन इस बात में भी भी चोर मौलाद पैदा न हुए इस घाम्ने बहुत हा ज्वाला घबराहट पैदा हुए अनक देया देविया मनाह गई और भल्ल में साकुम्बरों दया भा ध्याई गई, तब एक और भी पुत्र पैदा हुआ साकुम्बरदास जिसका नाम हुआ इसका तीन घाम्ने पीछे चलही देवा के प्रसाद से एक और पुत्र हुआ जो चण्डाममार्दक नाम से विख्यात हुआ इस प्रकार एक लड़का और तीन लड़के जमनादास के मौजूद रह पण्णु ब्याह होनेके पीछे साकुम्बरदास का भा देहान्त होगया जिसका विषयात्मा मौजूद है और अपने जेठ देवों के ही साथ रहता है इस हा विषया से जमनादास का कुमेन होगया था जिसका रज्जु म जमनादास की पहिला था म अपना जान खोदी था और जमनादास का दोषाग ब्याह कराने का मौका दे गए थे ।

जाने तानों मारियां क बाव में बेचारी एक लड़की टिमा की जो दुःखा होती रही है और जिन जिन महाकष्टों को सहकर गा यह जिन्ना रही है उनको यह लड़की ही जानती है, हमारे बन्धु में तो यह ताकत नहीं है कि हम उन सब सुमीवनों का बधान कर सकें और उनके बगान से पाठकों का दिल दुखाने के सिवाय और कुछ फायदा भी नें नहीं है महीन में इतना ही

म कर दिया और मुझे समागता की टहनी जयाव द दिया
 इसका परा योभू और क्या दुपुन कष्ट क्याकि पर मरा बाप
 इस वास्ते में तो अपने ध पे का बहुत हा बु उ धामता ह और
 जो हमाम लगाना ह पर भय भद्र व हृदय का क्या कर
 जसमं न भाह विवाता है और मर वरने का एक हाता ह
 भगवान ' क्या मर पर में यह हा इनवाफ है कि मर बाप जवा
 हृदय का हृदय रखनेवा न निदर अनुप्य मो धमात्मा बदलाय और
 मर परम भगत समझे जायें अगर मर भगतो का यह हा निशाना
 है और येवों ही म नू राजा है ता मरा ता तुह दूर से हा दइपन
 है पर शास्त्रों में ता में यह ही सुनती आरहा ह और अपने हृदय
 को जो यह समझा रहा ह कि बाप पुण्य ता भजन परिधामा क
 हा अनुवात लगता है और मरुता बुरा नियत क गुणाधिक हा
 मर मिता है इस वास्ते भगवान् तो एत भादमा म दगि क म
 ताजी नहीं होता है जो उतका पूजा पाठ ता बहुत बु उ करना ह
 मर हृदय को धपन बदार हो बताये रखता है जो मान माया हा
 बाप के पग में होकर मय तरह की बरमाना मर दवाधाना हा
 करता रहता है और अपने स्वाय में मधा होकर बिना दूग क
 मर मुकमान को वि कुल भा नहीं मरता है इस वास्ते हम ता
 देना हा मान्य होता है कि मर बाप का पूजा पाठ ता बु उ जो
 काम नहीं भगा है बल्कि इसकी माय मो एकरम हा दूष माना है
 क कि यह ता मरुवृट का हा धमात्मा बनता है और बाहर की
 दुय दिव से बरक हा मोलों को दगता है धमर मे धम का ले
 एक रना मर मा मंग उगमें मर है बल्कि उमक मर मो मरों
 की हा म हो पाठ मर है मर दमा और डिय मर कर उध
 उमने धाना देहा का हा बनेता निवार निदा है और दगडे
 मरों को मर निदा लव पर ता बहुत ही दगिया निदर है देना
 हा में उमका भद्र मोल को हा म मर और बरमूर का हाय

अध्याय १६

अब देवारा मुनापत की मारा राजरानी का हाल मुनिप कि मरफाग जासूम ने पूरी पूरी छानना एक इस बात की रिपोर्ट बाद कि राजरानी पर मम गिराने का मुकदमा बन्दुल ही मटा लगाया गया है उसको न कमा गम रहा है और न उसी गम गिराया है यह एक हमरे हा गाय में अचानक एक धमारा का गम गिर गया था निमने उसको कृडा पर फेंक दिया था, जमना दाम के कहा म पुत्रि का सिपाही उस गम का उठा लाया और उसका इ जाम इन बेगार के शिर लगाया इन ही तरह राजरानी के यह घोरा मा जमनादाम ने हा कराई थी और शेरसिंह का धमारा भी मालान होजाने का चाल भी उस ही ने चलाई था, कटर साहब ने जासूम का इन रिपोर्ट पर गम गिराने का मामला तो रात्रि पर दिया और राजरानी और शेरसिंह की पूरी पूरा तसह्ला करदा कि अब उन पर कोई भी आदमा किसी तरह की ज्यादाता न कर सकेगा। इन घाले यह तो अब बड़े इत्मानान स गाय म रहने गे है और भौंदू चमार का सहायता से घेता करके मय कुण्ट पैदा करने है नीर मुन चेत से रहत है, मगर अब क कटर साहब ने कतान साहब को यह हुकम दिया है कि वर जमनादास की इन सब कतनों का सपून इच्छा करके फौजदारी में उसका सालान कराये और उसको माफूल सजा दिलाये, इन घाले अब पुत्रि के लोग कतान साहब के हुकम स इन मुफ्तों के बाधने में ही लगे हुए है और जमनादास और उमक साधिया का चालान करने हा चाले है, जमनादाम का ना इन सब बातों की पूरी पूरी खबर मित बुझा है इन घाले यह मा आत्रक रात दिन इन हा के मोन्पोड में लगा हुआ है और रुपये की पाग का तरह मदा रहा है और टारों का तरह

1

भी मात्र कुछ बरा होंगे और हमारे माता को भा इन ही का
 माल बना देंगे, इस यामने इन बेगमों का मित्राय
 इतक और कुछ न समझा कि उन्होंने भीलों को तो उनक
 साथ ही पहा भेजा और मुद्द भात्रीविका का तकाश में पादेश को
 निकाल गये लेकिन जहाँ वहाँ भी यह लोग जाते थे अनजान होने
 के कारण कोई माकूत राजगार नहीं पाते थे और ठान भोग
 के जगार दावे पालद नहीं आता था इस यामने इनही सब जगह
 स नगा हो लीगना पड जाता था आदिउ उप दा तद्दा हाकर यह
 लोग भगा चचा मधुरादास के पास गये जो इस समय मुरादनगर
 में रहता था और जयपती मट बना बैठा था उन्ही इनको अपने
 मकान पर टिवाया धीरज देवर समझाया और अपने पास से
 कुछ रकवा देकर इनका रोजगार खगया ठान मधुरादास के
 मन्त्र होने के कारण गहर के लोगों में भा इनका बहुत कुछ पन
 थार किया और हरिश्चन्द्र का माल उधार रिया इस यामने इनका
 भयः तरफ बाय चाने लगा, तब ही हीन अपनी दिवों का भी
 यदा कुछ किया और मधुरादास से भयग रहना शुरू कर दिया ।



!

हैं हम घास्ने कई शहरों में घूमने फिरने पर भा मथुरादास की
 पत्नी नौकरों न मिली इस घास्ने मन्जल तो उमन टाकरी दोनो
 शुरू करी थीर मकानों की चिनाइ पर नहर का मुशर पर या
 बिना मटक की कुटार पर मिहनत मनदूरा करनी, फिर कुछ
 दिनों पीछे लोगों से कुछ जानकारी हासिल पर एक हलवाई की
 दुकान पर कमेरा रह गया, हलवाईयों के नौकर बहुत हा ज्यादा
 चटोरे होजाते हैं हर एक मिर्गई घुरा घुरा कर खाते हैं, लेकिन
 यह बेचारा एक भा कण नशी उदाता था और बिना दिये कुछ
 नहीं खाता था, हलवाई ने उसकी इस बात से खुश होकर उसको
 बहुत ही प्यार से रखता थीर बड़ा पौशिश स उमरा हलवाई
 का सब काम सिखाया थीर फिर अपना जगह बचत पिटाया,
 इस बीच में २०-३० रुपया उमका तनखवाह से बचकर उसके
 पास उमा भा होगया इस घास्ने अब उमने अपने मालिक का
 सलाह लेकर बहुत ही बढिया २ मिठाइयों और नमकान चीनों का
 ढवाचा बनाया उसमें गुड दूध खाड ताजा आटा और बच्चा
 ताजा घा लगाया उमका यह ख्याला सब हा की पसंद आया
 थीर उसको सब कुछ हाथ आया, सुबह स दोपहर तक ता यह
 ख्याला बनाता था थीर दोपहर स शाम तक तमाम शहर में फिर
 कर उसे बेच लाता था जो बच रहता था उसको अगले दिन
 ताजे भाग में नहीं मिलता था बल्कि घाला माल के नाम से
 गलहदा ही रहता था थीर कुछ सस्ता ही देता था, इसके अगवा
 यह जानकर बेजान थीर मद बूढे बच्चे सब की एक हा भाग देता
 था थीर टाक होक हा देता था डिम्बकी बजह से शहर में उमके
 ख्याले का बहुत ही ज्यादा ऐतबार हा गया थीर दूसरे ख्याले
 वालों स कर गुना ज्यादा बिकने लगा, इसमें उमही बहुत हा
 ज्यादा मुनाफा हुआ थीर एक हा घरम में खाया कर दार भी
 लगा सब रहा अब उमरा उस हा हलवाई का सलाह स ख्याला

धर्मोपदेश ।

संसार के मय ही जीव सुख पाने का तो इच्छा करने हैं और दुःख न पचना चाहते हैं, संसार के जाघों का सारा भाग दीष्ट और मय ही प्रकार के उद्यम और उपाय हम ही वास्ते हाते हैं कि सुख की तो प्राप्ति हो और दुःख दूर होनाय परन्तु सुख का प्राप्ति का उपाय रामोने यह ही समझ रक्खा है कि जिस चीज का मयको इच्छा हो उसकी तो पूर्ण हीनाय और जिसका हम नापसन्द करने हैं यह दृष्ट जाय संसार में अनन्तानन्त वस्तु मय पडा है और यह भी सदा पय रूप नही रहना है बल्कि अनन्तानन्त प्रकार के रूप बदलती रहता है इस ही प्रकार हमारा इच्छा ये भी सदा पय समान नही रहता है बल्कि यह भी क्षण २ में बदलता हा रहा करती है ता मय हम यह ही चाहते रहते हैं कि संसार का सय चाजें हमारा इच्छाओं के अनुमार हा बनता बदलती रहे और हमारी मजी के मुताबिक ही चलता रहे, लकिन ऐसा होना सिद्ध ही असम्भव है इस ही कारण मयना इच्छा के अनुमार न होने पर अपने हृदयमें दुःख मानते हैं और इच्छाके अनुमार हाजान को सुख गदानते हैं, यह ही हमारा मूल है, मगर हम वस्तु स्वभावका जानत ना यह बात मली भाति पदिचानत कि संसारका सारा कारखाना हमारे आधीन नही हो सफता है बल्कि मयने ही स्वभावके अनुमार चलता है इस ही वास्ते संसार की कार्र भी चाजें हमारा इच्छा के आधान नही प्रयत्न मयनी है बल्कि मयने ही बायद के अनुसार बनती सिगडती है, और सबसे मोटा बात हममें त्रिचार करने की यह है कि संसार का सारा कारखाना मनुष्यों के ही आधीन बने होनाय और, किस उनही की इच्छा के मुताबिक चलने लगे क्योंकि मनुष्य तो संसार में लाछीं करोडों और मयों सर्वा है इस कारण यह बेचारा संसार किस मनुष्य के आधीन चले और

क्याह ही उसका धरम और चार् होन का कशक्तिन करव सुख और दुःख मानने नग जान ही और कृपा कृश उदात ही ।

संसार क इन जीवों में मान माया लाभ मोघ कादिव धाय प्रकार की भयव उठती रहा करना ही जा कयाय कटगती ही इन ही कयायों के कारण तन तन्ह का इच्छायें उरग होना ही और हा हा कयायों के घस में हावर यह जाय पना थग्घा हा जाता ही कि वस्तु स्वभाव का ना मन् जाना ही धीर दिव्युट हा अरम्भव और उरुटो पुरन इच्छायें करे नग जाना ही और उनक पूरा न होने पर दुःख पाता ही जैसा कि मनुष्य स्वभाव क विसर जान और सामान्य विदा हावान क काम करना हुआ भा विदुष्य तदु वन रहा हा हा कयाय करता ही व्याह सादा मे सुख दिव ताउ कर कषणकशी करके धार अपना सुख जमा पूर्ण का मगता जियों क नेवट घडवाते में नगा कर धार बहुत कुछ बज धरन गित कशर भा धरवान हा बसा रहना पाहता ही और ऐसा दगा में ता मन्ता जैति अन्ता व्यापार करता रहन और सुख समाह होना मन का भागा काये करना ही अन्ता करतान को बहुत ज्यादा पाउ प्यार में विगाडकर और उमका रसा गिला पर कुछ भी प्याल न करे ता यह कशक्तिन रसा ही कि यह सब तरह कायव ही उठे और संसार में कया हा पाये, संसार के मोलों क भाग सुगह बावपर उनका पुकरान लहुवा कर और उनके कुछ भा कया न भावर ता पा ता जानता ही कि दुनिया के सब लोग मरे साना कोई सुगह न वरें बदिन पा करतान में के काय मयें, हम हा तन में कयाय करता हुआ दुनिया का मान दछा हुआ और पारा की क ट मन्ता रसा भा पर ता कहरता ही कि मेरे पारी का उरन न काय और दिवा सुख दिने ही मुने पुणव का पाव नित काय मयान् मेरे सब ही कावज निट हाउयें और मेरा सब हा इच्छा पूरा ही पाये ।

पत्र के लिये ललजाना है और पत्रद मिलन पर पचीस को जी चाहता है और २ मिले तो पचाम की तरफ मन दौड़ाता है और पचास मिले तो घट सौ की इच्छा पाचने लग जाता है गरम इच्छा का पति होन पर भागे २ ही बढ़ा चला जाता है और यों सना तदप २ कर दु ख ही उठाना रहा करत है ।

इसके निम्न यह भी देखने में आता है कि जो मनुष्य अपनी इच्छाओं को दबाता है और सन्तोष से ही रहना चाहता है वह समार की बहुत थोड़ा चीजें मिलने पर भी सुखसाना हा पाता है और हरएक अवस्था में आनन्द मग्न ही मनाता है, निम्नस यह बात साफ सिद्ध होता है कि सुख की प्राप्ति इच्छाओं का पूति में नहीं है बल्कि इच्छाओं का एक प्रकार का रोग है जिसके दूर होने या कम होजाने में हा सुख शान्ति का भोग है, जिस प्रकार कि सुखला की बीमारी म खाज के खुजाने से खुजली दूर नहीं होती है बल्कि दवा लगाकर सुखला के परमाणुओं का नाश करने से हा यह सुखली जाती है वा निम्न प्रकार की बलगम (कफ) का धामारा में मिटाई जाने की इच्छा होने पर मिटाई जाने से मृति नहीं होजाती है बल्कि ज्यादा २ ही बढ़ती चली जाती है और भीषधि द्वारा बलगम के दूर होने से हा मिटाई खान की घाह दूर हो पाता है इस हा तरह इच्छा का पूति करन से ता उम इच्छा की शान्ति कदाचित् मा नहा की जा सकता है, बल्कि इस तरह तो यह ज्यादा २ ही बढ़ती चली जाती है और ज्यादा २ हा दुःखदाय होती जाती है, किन्तु ज्ञान वैराग्य और शील सन्तोष क्या भीषधि के द्वारा हा चित्तनी २ यह इच्छा दूर का जाती है उतना २ हा सुख शान्ति प्राप्त होती जाती है ।

अनुभव से यह भा स्पष्ट ज्ञान होता है कि निम्न प्रकार कि भोग शराय और अफीम आदिक नजे की चीजों को चारचार कामे से उनका भादन पून जाता है और फिर जरूरत बेइकरत मा सयन का

ज्ञान गुण की दयाकर भयना कथाय के अनुसार ही मानने
 पाते हैं और ऐसे २ उल्टेपुल्टे वाक्य करने लग जाते हैं कि
 न हम बिल्कुल ही तदाह और यथाह होजाते हैं लेकिन फिर
 तब नहीं धाने हैं यन्त्रि और भी ज्यादा ० कथाय करन लग
 हैं और हम ही में भयना अनुसार दिखाने हैं हम यान्त्रिक यह ही
 न धम है और यह ही हमारा शुभकर्म है कि मान माया शोभ
 भादिक कथायों का ज्ञान जो हमारे हृदयमें उठता है अर्थात्
 जो बड़ा समझने घमण्ड करने और धाने माये में तिहुड़कर
 की मोवा दिखाने और माय ऊंचा बनने यानी मान करने
 ने मया हमको चलाता है और उल्टे चला दगा मूट, मकर
 के द्वारा भाना काम निचालने और यत्नार दिखाने यानी
 चारों करन का जा शोष हमको पैदा होता है और मंगार क
 यों की इच्छा शोभ लालच, खुदमर्जी और स्वार्थ अर्थात् शोभ
 य का जा पन्दा हमारे गले में पड़ता है और दूसरों को मारा
 देने और पुकमान पहुँचाने अर्थात् बोध कथाय का जा भक्ति
 के अन्दर भक्तता है इत्यादिक इन सब हा कथायों की सेवा की
 करना हम शुरु कर देखें और बराबर बन करन न चान आये
 नक कि यह बिल्कुल ही मया को प्राप्त न होजाये ।

परन्तु जिस प्रकार बौद्ध २ बौद्धों में ऐसा ज्ञान है जो
 दो से बहरी गया भा जा लते हैं बटिन स बटिन परदर को
 ज्ञिमान हैं और पैठ के बहने के अनुसार कई २ दिन का सहन
 कर जात है उनका ऐसा हा बड़ा हनाउ बिद्या जाता है और
 नाम ना उनको बहुत ही अद् दाजना है लेकिन ज्ञा बामार
 के बहुत कमजोर होते हैं हम बारण भयनी भादनों में नाकान
 न दवा भी मजेदार हा करने हैं एरेत्र भा कुछ मरा निचालने
 ज्ञानों यनों यनों मय ध्यान स ना चरता जानें हैं एरेत्र
 न मय हा बिद्या जाता है उनके यान्त्रिक दवायों का मात्र न

करके कुछ तो उन कथाओं के अनुसार चलते हैं और कुछ उनकी
 अपना विचारशक्ति के अनुसार चलते हैं यह गृहस्था की उत्तम
 अध्यात्म जिम्मेदारी है समय में सुख शान्ति में ही बीतती है और
 भगवान् के वास्ते भी हलचल कराने की ही आदत पड़ती है,
 ऐसे ही परिणाम सुखदायक या शुभ परिणाम माने जाते हैं और इनसे
 पैदा हुए आदतें या पुण्यकर्म कहलाना हैं तीसरी अध्यात्म यह है
 जिम्मेदारी है इन कथाओं को मर्यादा या दया देते हैं या जड़ मूठ से
 ही नाश कर डालते हैं और कुछ भी इन कथाओं के अनुसार नहीं
 चलते हैं अर्थात् संसार सम्बन्ध कुछ भी कर्ण नहीं करते हैं बल्कि
 अपना आत्मा के ध्यान में ही मग हो जाते हैं ऐसे परिणामों से
 इस समय का परम आनन्द होता है और भागे के वास्ते भी किसी
 प्रकारका कथाय करनेका आदत न पड़कर अर्थात् किसी भी प्रकार
 के कर्मों का बंधन होकर परम आनन्द ही आनन्द रहता है ऐसे
 ही परिणाम महाकल्याणकारी या शुद्ध परिणाम माने जाते हैं और
 इनमें ही मोक्ष की प्राप्ति बनाते हैं, इस प्रकार हमारे परिणाम तीन
 प्रकार के होते हैं एक अशुभ या पापमय परिणाम जो कथाय का
 तंत्रा से होते हैं, दूसरे शुभ या पुण्यमय परिणाम जो कथाय के
 हल्का होन से होते हैं और तामर शुद्ध या कल्याणकारी परिणाम
 जो कथाय के विरुद्ध न होने से ही होते हैं, इनमें से शुद्ध परिणाम
 तो गृहस्थात्मा साधुओं को ही मकन है जिनको यह ही अर्थात् तरह
 मकन मकन है और यह ही भला भागि उनका ध्यान भी कर सकते
 हैं इस वास्ते शुद्ध परिणामों के कथन को छोड़कर हम शुभ और
 अशुभ परिणामों का ही कथन करते हैं जो गृहस्थियों को सदा ही
 भान रहने हैं ।

गृहस्थात्मा साधुओं का ध्यान तो हम कुछ नहीं कह सकते हैं
 परन्तु गृहस्थात्मा अनुभवों का मन तो ऐसा चञ्चल है कि वह किसी
 समय भी विधायक नहीं होता है बल्कि क्षण २ में तरह २ का कथाय

और यह समझें कि जिसपर हम समय भा हमारे हृदय में बेवैरी
 पैदा होकर हमका भावुकता और दुख पैदा हो जाता है और भागे
 थ पाएन भा हमका पाप कर्मों का हा बाध रहता है लेकिन
 अगर हम न तो खुशामें आदा खुशी बनते हैं और न खू में
 आदा खू हा बनाने हैं अथवा खुशामें और खू में वेसुध नहीं
 होजाने हैं तो भागा हम व्यर्थता खूय का मटक को दसाकर
 खूका हल्की ही बनाने कि नियम हम समय भा हमारे हृदय में
 हाकिन रहकर हमको सुख घेन हा भाग हाता है और भागानो वे
 यामन भा हमको पुण्य कर्मों का हा बाध रहता है इन वाल्ये मद
 हा हमारा धर्म है और यह हा हमारा धर्म है कि हम खुशामें आदा
 खुशामें बनाने और खू में आना खू न बनने लगे जायें अकि
 अता नक होगक मयाने हम खू और खुशामें का कर्मना हा कर्मना
 बनने जायें जिसपर हो न २ बिना समा हम विरुद् हा समभायो
 बन जायें भी र परम भागा में मद्र रहने लगे जायें ।

हम पूरकाल लोग अगर दुनियाका उन हा बाडों की अमिच्छा
 करे जिन्हा प्राणि के यामन हम अंगिका कर मचने हीं ता हमारे
 दुखखड बाध्यमें ता किता ना मचानकी कमा मती कानी है बिम्बु
 हमारा सवामकवाह का अमिच्छाके अरु पर उानी है जिन्हा
 विरुद् और बेवैरकषका भावुकता हमक विरुद्भा मती मचाने
 वाली है अकिन हम ना तैमकिना का लख हवमें बिना बाधन ह
 और अमिच्छाको का लख मचाना है उइ बिना बाध ह हमारा ना
 विरुद् हा देना हम है भी र बाधो हमारा हो ना जिन्हा है कि
 मद्रको ना मती अमिच्छा और मद्रको मद्रको ना पर हा
 कारण है कि यह दुशां की सुख लखने देनाकर सेइ हा सेइ मद्र
 मद्रको मचाने है और देनाकर हा मचने लखने मचाने है और
 अमिच्छा होकर विरुद् हा सुख लखने देनाकर मद्र हा म
 मद्र को मचाने है ता दुखको देना हा मद्रको मचाने है ता मद्र

जो मनुष्य होना है जिसमें यह भयना हा सुखमान करने मय
 न वगैरे यथा यथा है और भयना मन्द् यथाय यथाय पुण्य
 है यथाय है और भयना यह ऐसा नहीं कर सकते हैं मय मा यह
 भयना यथाय यथा तेजा यथा यथा अधर्मो हा है और यथा ही
 यथाय है ।

इष्टानुसंग यदि कोई मनुष्य यह निश्चय होना पर भी कि इस
 वाक्य के ज्ञान से सुखमय रोग पैदा हा जायेगा या यथा जायेगा या
 यथा ज्ञान से यथा जायेगा, भयना ज्ञान यथाय यथा हाकर फिर
 भा उम यथाय का यथा है या किना दयाय यथा यथाय गुण
 यथाय यथाय भा उमके कष्टय यथाय होने के कारण उसको
 नहीं माला है नो यथाय यह भयना ज्ञान के यथा में है और उसका
 यथाय यथाय ज्ञान यथाय यथा में होगा तीव्र मोह यथाय यथाय यथा
 तेजाय ही कारण है इस यथाय यह यथाय यथाय यथाय यथाय
 होने से यथाय हा करना है और यथाय हा यथाय है इसके विद्वान्
 जो मनुष्य यथाय भयना यथाय यथाय यथाय हाता है यथाय रोग
 दूर होने के यथाय यथाय यथाय यथाय हा यथाय हा और
 यथाय यथाय का यथाय मना यथाय है उनका यथाय यथाय यथाय
 नहीं यथाय है यह यथाय यथाय में यथाय यथाय यथाय हा यथाय
 है इस यथाय यह यथाय यथाय में यथाय ही कर रहा है और पुण्य ही
 यथाय हा है यथाय यथाय से यथाय यथाय और यथाय से यथाय तक जो
 यथाय यथाय यथाय करते हैं उनमें यथाय यथाय यथाय, यथाय
 या यथाय यथाय का यथाय से यथाय यथाय जो यथाय यथाय यथाय
 कर यथाय है यथाय यथाय यथाय ही यथाय यथाय हा और यथाय यथाय
 यथाय यथाय यथाय यथाय यथाय से यथाय न हाते नो यथाय यथाय
 न यथाय ही उन यथाय के यथाय में यथाय हा यथाय यथाय यथाय यथाय
 हा यथाय में होने हैं इस यथाय यथाय यथाय यथाय यथाय यथाय

पुण्यों से काम भोग का इच्छा रखती थी, लेकिन इस
 राति ने प्रत्येक स्त्री की इच्छा को एक ही खास पुण्य
 प्रत्येक पुण्य की इच्छा को एक ही खास स्त्री पर ठहरा ही
 बना इच्छाओं को अन्य किसी स्त्री पुण्य की तरफ चलाने
 बिना ही रोक दिया है, इस याम्ने इस विवाद का
 मनुष्यों की यह काम भाग का इच्छा बहुत ही छोटीमा
 दर रह गई है और इस प्रकार बहुत ही ज्यादा पट्र गई है,
 य भाग बाह स्त्री पुण्य इस हठ को उलट्टन करता है और
 इस को भयना प्याही हुए जाडा से बाहर खेजाता है जो
 को यह काम बगैर बहुत ही ज्यादा कम है इस याम्ने
 यह यह धर्म हा करता है और पाप ही बमता है और
 पुण्य भयना प्याही हुए जाडा में ही समतोप करता है
 इच्छा को उलभ बाहर नगे जाने देता है तो देगा उ
 काम भोग का बगैर बहुत हल्की है इस कारण से ऐसा
 यह धर्म ही करता है और पुण्य ही बमता है ।
 इस याम्ने हा इतना बात है कि धर्म अधर्म का पुण्य पाप
 बगैर ही हल्का भाग होने पर ही विभर है, इस याम्ने
 स्त्री भाग ही विहासित पुण्य में वा बने पुण्य अधर्मों
 इन स्त्री में भा अधिब भाग हाता है और उम भाग
 अदे अ प्रेम में हा अधिब मोहित हाता है और इस प्रकार
 या हठ अ अन्दर हा मन्त्री बगैर का बदे देता है तो
 मनुष्य अधर्म हा करता है और पाप हा करता है ।
 इस में बगैर ही करी का उल्लि देना बहुत ही दि देना
 किसी भी पुण्य में वा है इस कारण करते हा
 मनुष्य का काम से अन्दर में बहुत हा भाग पुण्य
 और उमरे बहुत भाग विहास है और ही बने पाप में
 मनुष्य अ हठ उल्लि पर अधिब जो का पुण्य अधर्मों

विद्या प्रसार में पूरी मदद देना चाणियों उपादानों
 कि कदमों को परा २ सहायता करना उनकी रक्षा सिन्हाके
 काम परा २ य १ देना १५ का पान देना देना स्त्री नाकर
 १५ और अन्य भा सत्य हो आशियाकी योग्य पालना करना और
 १५ विद्या प्रसार की भी तकलीफ न होने देना हम हो प्रसार
 १५ और भी बहुतसी विम्वेदारियों हैं उनको पूरा करना के धाम्ने
 १५ देना देना हुआ है इन विम्वेदारियों को पूरा करनेमें मदद किसी
 १५ भगवान नहीं करता है और १ किसी प्रकार का पराया उपकार
 १५ करना है यदि धाम्नेय म मद नो अपना ही भ्रम चुकाना है
 १५ न ही मनुष्य के रहन सहन का दावा हो पना देना हुआ है जो
 १५ नगर का मनापना और इन सब विम्वेदारियों का पूरा करने स
 १५ हो पना है अगर हमसे कहिले मनुष्यों ने इन सब विम्वेदारियों
 १५ परा न किया जाता तो मनुष्य के रहन सहन का दावा ही दि
 १५ का जाता और महा उपद्रव और अशांति फैलकर मनुष्य जानि ही
 १५ को प्राप्त होनातो और यदि नाश को १ भा प्राप्ति होती तो
 १५ न्या उपद्रवान् और हमी भग मयस्थामें तो कदाचिन् भी न रहती
 १५ देना अस्थामें कि मद हमको सिना है और अक्षय नो हम पैना
 १५ हो सकत और पैना भा होते तो भगने सुखको मद सामिप्रिया
 १५ पावे विनाम कि नृनिया भग पडा है और जो मज्जों पगेडों पगे
 १५ न गानात कोपना न हो धतता और बहुत अला गारहा है इन
 १५ म्ने इन सत्य शतों के भगने पुष्यों के क्षणी है और इन क्षणका
 १५ पुकान के धाम्ने १५ हमका धात्रिय है कि हम हम समय का अह
 १५ रनोंके अनुमान मनुष्यनायका सुख शान्ति रक्षा सिन्हा और उपनि
 १५ के धाम्ने काशिम करे और परा २ सहायता लूंलार्ये ।

इनके वि १ य हमारी कलाप सप हो दकरा रह सकता है अब
 कि हम अपने माह को मनात के रूप हा मनुष्यों के देव में पैला
 पर स्वका पतना और हाका पना देयें और संसार पर

अध्याय २३

गुरुगद्गार का धर्मोद्देश ता बचन होगया परतु हमारे पत्रका का मन तो बुट्टे नमनावास का ही हाल जानने क पासते मन्तु होरहा होगा निम पर पुस्ति तो फौजदारा के मुखइमें च लये, जानका वाशिश कर रही है डिगरादार गग उसक माल म म्यावहो वालात्र परा बगसर गयता रुत्या धमू करनकी फिर म गग रह है, बटे परदशरा तिक गये है और उसकी जमान ज रु अलगगुल शिवा रहा है मकरो फजादो निम रही है, मरद तरद री उसका डा जग रहा है नाच में दम ला रहा है और गनों हाथी स घर का लुग गा है सष हा वानों का तरफ जमानादास का ध्या है मर हा का इत नाम है तकिन इम वत ता उमकी ज्यान वाशिश फौजदारा क मुखइमी म हा बचने का हा हा रहा है यह वार २ ग व में जाता है, गगो को फुमगता है उगता है गदर बाग निखाता है और अनर प्रसार क जाग फैला है जिसस काइ भा भाइमा म्मय सिपाय गवाहो देने को और अदालत में यडा होकर अमग - मामग माल देने को तय्यार न हो, क्योंकि पुस्ति के नामूम ने तो गयतक जा कुछ भा माइम किया था नह सष भेव वर पर गाव क गगों स मिलकर और उनकी पुन दात्र मुनर हा गगग रिष भा गिनि अच ता गुम गगों म वाम नगी चलता है वाक नरा बलगा में गगदा देना पटना है तब हा मुखइमा चरता है, इम वास्त पुगस गात्र घाटों पर बडा जार दरहा है और उनकी गगदा दन क पासत मजबूर कर रग है।

इपर जमानादास का गाव घाटों पर यह मन्तर चल रहा है कि अगर हुमन मउ २ व में होला य र राजराना के यडा घोष होन शेरमि पर ग व म कारिया बगन का भूटा इतनाम लगावे

पार भाभाया और जग श्रीनार करने के घामने बहुत गोर मगाया,
 और इस बात पर बहुत जार लगाया कि कम से कम यह बात ही
 जगि कर हा लेता चाहिये कि मातागो दो हजार रुपये का
 मन्दाय तो और मदिना में देगाई है और दो हजार रुपये का
 मगन से एक मगन सोधने पर घामन के घामने कर गई है
 पमनागम न गिता के मरन पर भी पाय की रुपये का मन्दाय
 घामन नगर के मदिने में लगाया था जगि उम घन, उमको यह
 मान्य मदी हामबा था कि गिताको कुछ नकरी भी छोड गए है
 इस घामने यह रुपया उमन धपन पार से लगाया था, लेकिन
 अब ना यह बात विस्तृत हा प्रमिद था कि मातागो पाय हजार
 रुपया छोड गई है इस कारण अब का पार तो जमनादीन ने
 बहुत हा पर फैलाया और इस गाने रुपये का उनक मरन में हा
 करे का हा के घामने जार लगाया कि कुछ धपने घामन से भी
 लगाए एक बाया श्रीनार परा का बाहा लगाया लेकिन
 मपुरादीन ने उमको एक भा ग सुनी और बाफ - कइ दिया कि
 माता गिता को अब में धपने घामन से यहा लाया था उम एक
 उनके घामन एक फौडा भा नहा था, पर यहा मेंने उनका दो सी
 रुपये महाना इस हा गरज के घामने उना गुरु किया था कि यह
 अपना मरनी के मुताबिक निस चाहें दान करते रहें, लेकिन
 उन्होंने इस बात रुपया महाना ही रख किया और बाको रख
 रुपया बचना हा रहा यह ही यह रुपया है जो उनके पास से निकला
 है, मरने समय भा घर कुछ रख करन के घामने नहीं वह गये है।
 इस प्रकार यह सब बचा हुआ रुपया मेरा हा है नियाय मेरे इसमें
 और किसी का मा कुछ अधिकार नहा है, और मैं अपना रुपया इस
 प्रकार रख करना अधिक भा पमन्द नहीं करता है निस प्रकार
 बाप बताते हैं मैं तो एक फौडा भा हा कामों में नहीं लगाऊंगा,
 हा प्रायसे इच्छित है जो चाहें अपने पास से लगावें और गिध

अध्याय २७

हार्द वरस का हीकर मधुनाशम का पुत्र भी धन बना लामो
 र एक मनेहा बहुत ही ज्यादा मोक्ष लियाया लेकिन मधुनाशम
 के लक्षो पद हा ममभाषा कि निग धनु का प्राप्ता का अधिक
 पुत्र होता है उस हा के बिछर जान का रज भा अधिक हा हुआ
 जाता है इन ही कारण मने इन पुत्र का उत्पत्ति क समय बना
 या कि अधिक गुणा नहीं मजाना चाहिये बरिब एक पंदा हात
 का एक साधारण का हा धान समझना चाहिये इन हा प्रचार
 पर म उतका मृग्यु होजाने पर ना बनता हु कि अधिक हाक मी
 परना चाहिये क्वाकि अधिक इन भीर अधिक मोक्ष पाकरवा नह
 र हा कारण हाता है भीर काय का नह होना हा पार है इन
 जान अधिक इन या अधिक मोक्ष बनन में मो निषाध पार के
 और पुत्र मा हाथ नहीं भाता है मृग्यु का ना पद ही धर्म है कि
 पर गुण का बाण म ना अधिक गुण न मनये ई र रज का बाण
 है अधिक मोक्ष न जाने लग जाये बरिब होनी हा अवस्थामो में
 मने, कणयको मन्द स्वकर गुण मा धरहा इ मणय करे और
 रज मा धरहा हा विद्या करै ।

पुत्र के जाने क मोक्ष हा मने पाठे मधुनाशम क ना क
 ना इच्छा होमना इन समय उतक पद बनना को उत निग ना
 किना कारण में उत ने मणय हा बनना हाता क दो ने क
 होना हा मणय निग न उतका उत का होमना हा और इन
 कयेके निगक पणय मा ना ये है ही उतक नह और उतका
 उत नेक मणयक होना मधुनाशम क ना क इन उतक
 पुत्र मने पुत्र भीर उतको के मणय नह उते पुत्र मने निग हाता
 पणय कबा पद न हुआ हां बहुत र निग क उतके उतक पुत्र
 विद्यन बनने न न मणय उतक उतके पुत्र न

होते हैं अतः नदी बरेंगा तो आगे की वंश किस तरह चरेंगा
 'उत्तर' के घाटने का सत्तर सत्तर धरम के कुत्ते भा अतः
 आते हैं और कई कई श्रियां के जाने भी तबान का आन जाने
 है फिर नृतो मभा यथा ही है इम वास्तु मुझे ना उक्त हा आन
 आता एतेना और मेरा पद पदना अक्षय ही मानता पड़ेगा

मनुमान्त उमा-1 हा घातों में वि-कुल भा नदी आन और
 उर मर आता मे उतर्न आता ही आता तो उमा-1 साफ २ हा
 पर पुताया वि विजाह आता और जोही बनाकर आता ही-पेरन
 में भा आता का मुख्य भम मजता है जिसम अयक परिणाम
 भा टाक रर मजत है और मजता का उतरनि भा ही मजता है
 परतु मजतान पैदा करने और वंशरेल आने को में इता लक्ष्य
 मही मजता है मजता कि मजत बना है इतना इता अक्षय
 मजता हा मेरा मजत म निरा मजता और उमजता के विवाय
 और पुठ ना मही है इतिहास के देखन स साफ ना आता है
 वि किमो मजत म इम दि-कुल भा में मजता होना का
 बहुत ही ज्यादा प्रचार हो गया था और अधिउतर - मघर छोड़र
 अक्षय में जा बनेन लगे थे पहा तक वि मजता रिता भा मजत बघो
 को मजता बनाने के घाटने साथु मजतो मजतो और मजतो पर
 कटा दिया करने थे पुराना मजत ना मजत तक पहा है कि मजता
 मजता भा मजत हा मजता राजान थे और एक पक्ष मजत
 राजा के मजता होत पर उमके साथ बाल बाम मजत राजा
 मजता राजान थे मजत उर राजाओं के साथ मजत मजता आगे
 के मजता होने का ना मजता ही क्या हा मजता है एसा मजता
 में मजता को मजता ना बहुत हा ज्यादा करने एम मजत था और
 भारत भारत के देशों से दि-कुल भा पर मजत मजता ना होने मजत
 मजते थे, मजत का मजता है कि अब मजता मजता पहा है मजत
 मजते ही मजता म मजता पैदा ही होकर मजते है इम मजत

पक्षि पंदा होती है परन्तु अपना स्थिति का मरजाने से जानि
 एक तिहार पुढ्य ओ रडवे होजान है वह राडों से तो ब्याहे नहीं
 ज मरज है हम बारण कुवारी बन्ध्याओं को हा ब्याहत है हम
 शर एर तिहार लडकिया रडों का ब्याहा नाकर कुवारे लडकों
 के मरज दो तिहार लडकिया हा रह जाती है और एक तिहार
 लडकिया के वास्त कुवारे हा रह जाते हैं और यदि कुवारे लडके
 दो तिहार से कुछ अधिक ब्याहे जाते हैं तो उतने हा रडवे बिन
 ब्याहे रह जात है मरज जितना स्त्रिया राड बँटा है उतने हा पुढ्यो
 को भा दिना रडों के कुवारा या रड्या ही रहना पडता है, हम
 प्रार उच्च जातियों का एक तिहार स्त्रियों तो राड होकर दोबार ।
 ब्याह न होनेके कारण मरतान उत्पन्न नहीं कर सकती है और एक
 तिहार पुढ्य ब्याह के वास्ते लडकिया न मिग्ने के कारण मरते
 हम तक कुवार या रडवे ही रह जात है और मरतान उत्पन्न नहीं
 कर सकते हैं परन्तु जिनका यह बिकलता है कि उच्च जातियों में
 अन्य जातियों का अपदा एक तिहार प्रजा बम पैदा होता है और
 हम हा वास्ते इन उच्च जातियों का गिनना बराबर घटता ही घली
 प्रजा है निम्ने इन जातियों के शाप हा मारा होजान का पूरा २
 सम्भावना होकर है हमके विच्छेद जिन जातियों में विषया विवाह
 होता है उनमें रडवे या रडों का ब्याह लेन है और सब कुवारी
 लडकिया कुवारी के हा वास्त बच रहना है यथा सब ही कुवारे
 रडों का ब्याह हाजाता है नरन्य यह कि उन जातियों में न तो
 कोर रड्या हा रहता है और न कोर कुवारा हा बलिष्ठ सब हा ब्याह
 जाय सब हा मरतान उत्पन्न करते रहत है और उनही गिनना
 बरती चली जाता है ।

ऐसी भवस्या उपस्थित होजाने पर सब उच्च जातियों में मा
 देव नेहा उड गये हुए हैं तो यह बतन है कि उच्च जातियों में मा
 रडुया का ब्याह तो राडोंम हुआ है और सभी कुवारा मरते

को १२ १३ वर्ष का छोड़री को व्याह गऊ सोचने और सम्भलने का बात है कि जिस पुत्र की जयानी इस समय डलने का हो तबका पमा छोटीमो कन्याम त्रिगह करना जिसम गयतक जयानी भाई मा न हो क्या महापाप नहीं है साफ यान है कि अगर मैं भय व्याह करालू तो जब मेरा ग्रा को जयाना आयगी उस घत मेरो जयानी डल आयगा और अगर सारी जयाना न भा दूत्र चुकेगा तो बेसी भापूर जयानो तो हगिज भी न रहेगा जैसी जयाना कि उस समय मेरा खो को भाई दुद हागी इस वास्तु मेरा और उसका मेन तो किसी तरह भी नहीं मिल सकगा और उसको ता इस पुमेल से महान् दुम ही होगा जिसको यह रिमा प्रगार भी सहन न कर सकेगा और अपने मन में हरबक लडगा ही करगी, यह तो साशात् महान् जीव हिमा है और जीव हिमा में मा सपस बहिया अधान् मनुष्य जिमा है, पमा मगान् हिमा करने का तो मुकरो किमा तरह मा साहम नहीं होता है और पेमा कठोर ता मरा चित्त किमा तरह मा नहीं बनता है मरा मा तो ऐस व्याह कराने को साशात् ही महारासमपने का व्यवहार सम्भलता है और इसको महाभन्याय मानकर इससे मनुष्य के मनुष्यपने को बहा लन जाना हा निव्याय करता है ।

इसके अलावा यह भी साफ जाहिर है कि अगर हम दोनों रीं पुत्र मनुष्य का पूरे उमर पाये ता मैं मनुष्य हा उन रीं से २० २५ वर्ष पहिले मर जाऊगा मधान् २० - वर्ष तक गूढ रहकर जिन्दा रहने के वास्तु उमरका अधन पाए छोड़ जाईगा रदाय का दुख जैसा महाभयपूर होता है उसको सब हा गान जानने है इस ही कारण जो रीं अधन पतिव पाए जिन्दा रहनी है वह गदा मगान् और पाविता गिमा जाना है एतनु यह सब मनुष्य बाने ता सब हा हीगा जब कि मैं ३५ वर्ष का उमर में वर्ष १२, १३ वर्ष का बन्धिका म व्याह करालू इस वास्तु इन सब मनुष्यपने का धराना

एक बात में भगी माति सब को निश्चय बना रखना है
की मन्तो सब बहिषा दिया सबाना कि दुकान में बनी किसी
बनना नहीं है, जिनका दोषदारा है उसमें स्वीकार जेनदारी है पर
है मुक्ति तो यह ही भाषणा है कि जेनदारी ता सब फिर पर
बाधे हुए हैं और इन बाधे टूटाने लग गये हैं और शक्य भा
विद्याना नहीं चाहत है,

मधुसूतन न यह सलाह देना बनाह था किममें सब हा का
पणदा था और जिना का कुछ भा सुबसान नहीं जाना था मगर
दुखदा ता स्वार्थ के साथ में भगवा होरहा है इन हा कारण हमक
इस सिद्ध तो उनका इन सलाह के विरुद्ध यह हा कोरिना करने
बाधे थे कि हमारे विद्या विद्यान पायी और विद्यानदारोंने न किम
का मधुसूतन का कुछ लेना है उनको तो सब पर पहिले दिया
दे भार जिन हमारे इष्ट विद्यो न मधुसूतन को कुछ लेना है उनको
मधुसूतन का ता बहुत उदयो पहिले का सलाह शिखाकर उन हा
के मधुसूतन मधुसूतन का बड़ी बहालण है और उनका मधुसूतन
के जिना इष्ट सिद्ध के नाम के दूटना परे निश्चयसे किममें यह
गान सुनने में मन्तो किममें का बगवा बदा करने गये और यह
दिया दिव्यानि किममें के लिये मधुसूतन के काम जाना रहे
एक मधुसूतन तो उनका इन बाधो को हलित भी नहीं जान
रखना था और जिना सार भी मन्तो ईमान नहीं का रखना हा,
इन सार मधुसूतन के सब सिद्ध करने न बहुत कुछ बगवा है
और मन्तो का मन्तो मा मन्तो का मन्तो के विद्यान का हा हा
एक न जिना के बदा के बगवा जाने से और हा का मन्तो मन्तो
जिन के हा का मन्तो मन्तो और हा का मन्तो मन्तो हा हा हा हा
और मन्तो का हा मन्तो हा हा मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो
मधुसूतन का न इन बगवा और मधुसूतन के मन्तो मन्तो
मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो मन्तो
बगवा मन्तो मन्तो

लदा हुआ लगा बसि भी भी निगा लुगा उतन भी मयरादान
 व ही बुग लग बल भीर पया बडा बम से मता किया पर
 मयरादान १ विगा का भी पाग का बुउ सपा न किया भीर
 २ तो बात पर दगा हा रल भालिग धपी मुकहम का अपात्र
 गयत बरब जमनादास का उतन साथ ही जाना पदा भीर सात्र
 न मर पदा डमन गात ही रहना हुमा जमनादास की छा
 जिनी तर भा उतके साथ जाने पर राधा न हुर भीर मयुरादास
 का गार्जिया देता हुई भवन भाइयो व पास हा घना गई
 मयुरादास व पास जाकर जमनादास गाग तो अपने बेटों व
 परा खाता था परन्तु यह अपना अधिक समय तो मन्दिरजा में
 पूजा पात्र बरन भीर जाय जपन में हा लगाता था भीर बापा
 समय यह अपने देग की दूना पर बैठर पर मयुरादास व पास
 र वर हा बिलाना था मयुरादास न उसका परियार समझाया
 भा रि मारी का सं परिणाम विगहने है इन घाम्ने अगर तुम
 भा पीर छाग मोन दूना परन गौ तो जी भा लगा रहै भीर
 हा पैम को आमदा भा हीन गौ लेकि जमनादास ने उसकी
 व बात बिलु भा पम न का बरि उतका हा ताने देने लगा
 वि एकवार लगपती साहुजर होकर फिर उम ही शहर में बाटे
 माल की दूकाग मोलकर बैठ जाना भीर जग भी १ शरगाग तुम
 ही शोभा देता है पर म तो अब मरा मरा भी सी मा पा है भी
 दोनों हाथों स अपनी आसन घामे घेठा है इन घाम्ने मेरे स व
 हो सक्ता है जि में कोई छोटा सी हटडा छोट पर बैठ जाऊँ भी
 अपना घवी घ गई माघरु गगाऊ हा मुझे पत्रा देकर एक म
 व जिन्हे तरा पैद म उरुन पड गया है निस्तम मुझे
 यह नि ता घेशर नरे भाधान रहकर और मेरा पक्षी
 वर हा बिलाने पडैगे माल पर बिलाने व पाछे ल
 वि जिम तरह विगडा की बनाया बरते है भी
 पर घनाया करी है।

पाने दिया करे और जो और उसके मकान का उगला भी लगादे
 न सारे मकान को सी सां धार धाया करे तो पंसा करनेमें तो यह
 मकानों को सुख में धार नहीं करता है बल्कि अपने हाथों से ही अपने
 मकानको साफ रखने और अन्य पुस्तकों से ग्रह करके उनको अपने
 नयनको न छूने देने का अपना शौक ही पूरा करता है इस ही
 प्रकार नहाने धोने, गुच्छिका करना और छतपात निमानेमें भा घम
 का ख्याल भी नहीं होता है बल्कि कुछ द्रवमाप उठर बढ़ जाता
 है, परन्तुम है कि मैंने अपनी सारी उमर इस दाढ़ मास क देने
 महाप्रवित्र शहर का शुद्धा में ही गया और अपने परिजनों के
 सुचारने में कुछ भी बुद्धि न लगाए थाक है कि मैं अंत्यम के
 सका को समझे बिदुन ही देखाइया घम करने लगा गया और
 भाष बन्द करके मर्घों के ही पाठे चलन लग गया इसमें शब्द
 मयों है कि इसमें अधिक शोष हो मेरा हा है जिमने घम का कुछ
 भी छानखान न करा और बस ही बेगार के तीर पर एक मापना
 गुरु करदों परन्तु इसमें कुछ शोष उन लोगों का भा है जो आज
 बूढ़ कर भी मुह देखा बहन लग आते हैं और हा में ही निमाने के
 वास्ते मर्घ क्रियाओं में भा घम बताने लग आते हैं जिमस इन
 जैसे मूख लोग तो हमारे आकर परिजनों की सुखी करवे में
 बहित ही रह आते हैं ।

• अब उपवादान सोचता था कि उपवास करना तो गुरुस्था के
 वास्ते इस ही लिये रखा गया है कि उस दिन यह गुरुस्थ के सब
 ही कामों को छोड़कर और पावे एनें स भी बंकिकर होकर
 सात दिन धर्म ध्यान में हो सपावे, इस ही कारण धर्मध्या
 नके तो ऐसे उपवास को बीमारों केसा सहन ही बनया है
 उपवास करने वाला अपना गुरुस्थ का भा काम करना
 सपथा धर्म ध्यान में हो न लगा रहे, परन्तु शाक है
 कबतक इस सहन करने की ही धर्म माना और घम